ch-9

18/11/2022

(i) 'मंडल' का लागू होना :—

⇒ राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार ने मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने का फैसला किया। इससे अन्य पिछड़ा वर्ग की राजनीति को सुगठित रूप देने में मदद मिली।

(ii) राजनीतिक परिणाम :—
1980 के दशक में दलित जातियों के राजनीतिक संगठनों का भी उभार हुआ। 1978 में 'बामसेफ' का गठन हुआ।

⇒ इस संगठन ने 'बहुजन' यानी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यकों की राजनीतिक सत्ता की जबरदस्त तरफदारी की।

⇒ दरअसल कांशीराम के नेतृत्व में बसपा ने अपने संगठन की बुनियाद व्यवहार केंद्रित नीतियों पर रखी।

(iii) सांप्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र :—

⇒ इस दौर में आया एक दूरगामी बदलाव धार्मिक पहचान पर आधारित राजनीति का उदय है।

⇒ भाजपा ने 'हिंदुत्व' का रास्ता चुना और हिंदुओं को लामबंद करने की रणनीति अपनायी। 'हिंदुत्व' अथवा 'हिंदुपन' शब्द को वी. डी. सावरकर ने गढ़ा था। और इसको परिभाषित करते हुए उन्होंने इसे भारतीय राष्ट्र की बुनियाद बताया।

⇒ सन् 1986 में ऐसी दो बातें हुईं जो एक हिंदुवादी पार्टी के रूप में भाजपा की राजनीति के लिहाज से

प्रधान हो गई। इसमें पहली बात 1985 के शाहबानो मामले से जुड़ी है। भाजपा ने कांग्रेस सरकार के इस कदम की आलोचना की और इसे अल्पसंख्यक समुदाय को दी गई अनावश्यक रियायत तथा 'तुष्टिकरण' करार दिया।

(i) अयोध्या विवाद :—

⇒ दूसरी बात का संबंध फैजाबाद जिला न्यायालय द्वारा फरवरी 1986 में सुनाए गए फैसले से है। इस अदालत ने फैसला सुनाया था कि बाबरी मस्जिद के अहाते का ताला खोल दिया जाना चाहिए ताकि हिंदू यहाँ पूजा पाठ कर सकें, क्योंकि वे इस जगह को पवित्र मानते हैं।

⇒ 1940 के दशक के आखिरी सालों में मस्जिद में ताला लगा दिया गया, क्यों कि मामला अदालत के हवाले था।

⇒ भाजपा ने जनसमर्थन जुटाने के लिए गुजरात स्थित सोमनाथ से उत्तर प्रदेश स्थित अयोध्या तक एक बड़ी 'रथयात्रा' निकाली।

(ii) विध्वंस और उसके बाद :—

⇒ जो संगठन राम मंदिर के निर्माण का समर्थन कर रहे थे, उन्होंने 1992 के दिसंबर में एक 'कारसेवा' का आयोजन किया।

⇒ सर्वोच्च न्यायालय ने राज्य सरकार को आदेश दिया कि वह 'विवादित स्थल' की सुरक्षा का पूरा इंतजाम करे। बहरहाल 6 दिसंबर 1992 को लोगों ने मस्जिद को गिरा दिया।

⇒ मस्जिद के विध्वंस की खबर से देश में हिंदू और मुसलमानों के बीच झड़प हुई। 1993 के जनवरी में मुंबई में हिंसा भड़की थी।

⇒ उत्तर प्रदेश में सत्तासीन भाजपा की राज्य सरकार को केन्द्र ने बरखास्त कर दिया। इसके साथ ही दूसरे राज्यों में भी, जहाँ भाजपा की सरकार थी, राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया।

⇒ सांप्रदायिक सौहार्द के इस लोकतांत्रिक माहौल को 1984 के बाद से कई दफा चुनौतियों का सामना करना पड़ा है।

(iii) गुजरात के दंगे :—

⇒ 2002 के फरवरी-मार्च में गुजरात में बड़े पैमाने पर हिंसा हुई। गोधरा स्टेशन पर घटी एक घटना इस हिंसा का तात्कालिक उकसावा साबित हुई।

⇒ अयोध्या की ओर से आ रही एक ट्रेन की बोगी कारसेवकों से भरी हुई थी और इसमें आग लग गई।

⇒ अगले दिन गुजरात के कई भागों में मुसलमानों के खिलाफ बड़े पैमाने पर हिंसा हुई। हिंसा का यह तांडव लगभग एक महीने तक जारी रहा। लगभग 1100 व्यक्ति जिनमें ज्यादातर मुसलमान थे, इस हिंसा में मारे गए।

⇒ गुजरात में घटी ये घटनाएँ हमें आगाह करती हैं कि इससे हमारी लोकतांत्रिक राजनीति को खतरा पैदा हो सकता है।

(5.) एक नयी सहमति का उदय :—

⇒ 1989 के बाद की अवधि को कभी-कभार कांग्रेस के पतन और भाजपा के अभ्युदय की भी अवधि कहा जाता है।

(i) 2004 में लोकसभा चुनाव :—

⇒ 2004 के चुनावों में कांग्रेस भी पूरे ज़ोर के साथ गठबंधन में शामिल हुई। 2004 के चुनावों में राजग और संप्रग को मिले कुल वोटों का अंतर बड़ा कम था।
राजग = राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन।
संप्रग = संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन।

⇒ 1990 के दशक के बाद मुख्य रूप से चार तरह की पार्टियां उभरी – (i) कांग्रेस के साथ गठबंधन में शामिल दल
(ii) भाजपा के साथ गठबंधन में शामिल दल
(iii) वाम मोर्चा दल।
(iv) ऐसे दल जो किसी में शामिल नहीं है।

(ii) बढ़ती सहमति :— (i) नयी आर्थिक नीति पर सहमति
(ii) पिछड़ी जातियों के राजनीतिक और सामाजिक दावे की स्वीकृति।
(iii) देश में प्रांतीय दलों की भूमिका की स्वीकृति।
(iv) विचारधारा की जगह कार्यसिद्धि पर जोर।

★ मंडल आयोग :— 1977-79 की जनता पार्टी की सरकार के समय उत्तर भारत में पिछड़े वर्ग के आरक्षण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मजबूती से आवाज उठाई गई। इसके लिए केन्द्र सरकार ने 1978 में एक आयोग बैठाया। इस आयोग के अध्यक्ष बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल के नाम पर 'मंडल कमीशन' कहा जाता है।